वृष्ट्यनुमान से सम्बन्धित विविध ज्योतिषीय चक्र

त्रिनाडीचक्र-

एक सर्प की आकृति बनाकर उसे नौ भागों में विभाजित करके पुनः एक भाग में तीन नक्षत्रों को अश्विनी आदि क्रम से लिखने पर नौ स्थानों में तीन पङ्क्तियाँ बनती हैं । उनकी क्रम से स्वर्ग, पाताल, भूमि अर्थात् ऊर्ध्व नौ पङ्क्तियों में स्थित, नक्षत्रों की स्वर्ग, मध्य में स्थित की पाताल और तीसरी पङ्क्ति में स्थित नक्षत्रों की भूमि संज्ञा समझकर वर्षा का आदेश करना चाहिए। जब समस्त शुभ व पाप ग्रह एक नाडी में होते हैं तो शीघ्र ही अधिक पानी की वर्षा होगी ऐसा समझना चाहिए। जब इस त्रिनाडी चक्र में स्वर्ग नाडी में पापग्रह और पाताल नाडी में शुभ ग्रह संचारण करते हैं तो शीघ्र वर्षा होती है। जब एक नाडी में नपुंसक ग्रहों का योग होता है या स्त्रीसंज्ञक ग्रहों का तो वायु चलती है पर वर्षा नहीं होती है। जब स्त्री एवं पुरुष संज्ञक बली ग्रह एक नाडी में होते हैं तो उत्तम वर्षा होती है। जब नपुंसक एवं स्त्री ग्रह होते हैं तो ठण्ड होती है तथा पुरुष ग्रह एक नाडी में होते हैं तो वायु का भय होता है। वातादि नाडी में स्थित ग्रह तज्जनित फल प्रदान करता है। जब बुध, शुक्र, भौम, गुरु एक नाडी में उक्त सर्पचक्र में होते हैं तो उस समय अवश्य ही अच्छी वर्षा होती है। जब भौम मार्गी होता है तब या गुरु का उदय या शुक्र का अस्त समय और शनि की वक्रता समाप्ति में वर्षा होती है।

स्पष्टार्थ चक्र-

अश्वि	आर्द्रा	पुनर्वसु	उ.फा	हस्त	ज्येष्ठा	मूल	शतभिषा	पू. भा.	**स्वर्ग**
भरणी	मृगशिरा	पुष्य	पू.फा.	चित्रा	अनुराधा	पू.षा.	धनिष्ठा	उ. भा.	**पाताल**
कृत्तिका	रोहिणी	श्लेषा	मघा	स्वाती	विशाखा	उ.षा.	श्रवण	रेवती	**भूमि**

सप्तनाडीचक्र-

बृहद्दैवरञ्जन में सप्तनाडीचक्र की विस्तार से चर्चा की गई है। ग्रन्थकार का कथन है कि इस चक्र का आश्रय लेकर साधक लोग वर्षा का ज्ञान जनोपकारार्थ आदेश कर सकते हैं। एक सर्प की आकृति बनाकर उसे सात भागों में विभाजित करके पुनः एक भाग के चार हिस्से करने पर चार नाडियाँ बनती हैं अर्थात् इन चारों नक्षत्र की एक नाडी होती है। न्यास करते समय प्रथम कृत्तिका नक्षत्र से ही अभिजित के साथ विभाजित करने पर 7*4=28 नक्षत्र उचित होते हैं। कृत्तिका, विशाखा, अनुराधा,

भरणी इन चार नक्षत्रों की शनि की चण्डा संज्ञक ऊर्ध्व प्रथम नाडी है। दूसरी रोहिणी, स्वाती, ज्येष्ठा, अश्विनी सूर्य की वायु संज्ञक होती है। तीसरी मृगशिरा, चित्रा, मूल, रेवती भौम की अग्नि संज्ञक होती है। चौथी आर्द्रा, हस्त, पू०षा०, उ०भा० गुरु की सौम्या संज्ञक होती है। पाँचवीं पुनर्वसु, उ०फा०, उ०षा०, पू०भा० शुक्र की नीरा संज्ञक होती है। छठी पुष्य, पू०फा०, अभि०, शतभिषा बुध की जल संज्ञक होती है। सातवीं आश्लेषा, मघा, श्रवण, धनिष्ठा चन्द्र की अमृत संज्ञक होती है।

इसे इस चक्र से आसानी से समझा जा सकता है-

चण्डा	वायु	अग्नि	सौम्या	नीरा	जल	अमृत	नाडी
शनि	सूर्य	भौम	जीव	शुक्र	बुध	चन्द्र	नाडीश
कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	अश्लेषा	नक्षत्र
विशाखा	स्वाती	चित्रा	हस्त	उ०फा०	पू०फा०	मघा	नक्षत्र
अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पू०षा०	उ०षा०	अभिजित्	श्रवण	नक्षत्र
भरणी	अश्विनी	रेवती	उ०भा०	पू०भा०	शतभिषा	धनिष्ठा	नक्षत्र

इस सप्तनाडी चक्र के मध्य में स्थित सौम्य नाडी है और आगे की तीन नाडी सौम्यसंज्ञक और पीछे की तीन नाडी याम्यसंज्ञक हैं। पापग्रह याम्यनाडी में और शुभग्रह उत्तरनाडी में हों एवं मध्यनाडी यथावत् हो तो ग्रहों के अनुसार सौम्य, याम्य नाडी का फल होता है। यदि एक नाडी में 2, 3 शुभ ग्रह हों तो उस नाडी का शुभाशुभ फल कहना चाहिए। यदि वर्षा समय में चण्डनाडी में ग्रह हों, तो अधिक हवा चलती है, वायु नाडी में भी ग्रहों के रहने पर हवा सुन्दर चलती है, वायु नाडी में भी ग्रहों के रहने पर हवा सुन्दर चलती है, तथा अग्नि नाडी में ग्रह हों तो अत्यन्त गर्मी होती है। सौम्य नाडी में मध्यम अर्थात् सुहावना मौसम होता है एवं नीरा में मेघों का आगमन और जलनाडी में ग्रहों के साथ चन्द्रमा होने पर तथा अमृत में भी अच्छी वर्षा होती है। यदि एक भी ग्रह अपनी नाडी में संचरण करता है तो उस नाडी का फल देता है और मङ्गल समस्त नाडियों में नाम सदृश फल देता है, यह इसकी विशेषता है।

वर्षाकाल में आर्द्रा नक्षत्र में सूर्य के आने पर उक्त चक्र में चन्द्रमा को देखकर तथा उसी नाडी में शुभ और पापग्रह या दोनों (शुभ, पाप) हों तो उस दिन अच्छी वर्षा होती है।

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

वर्षा के समय जिस दिन एक नक्षत्र में अधिक ग्रह या समस्त एकत्रित हों तो अधिक वर्षा होती है। जब तक चन्द्रमा उस नक्षत्र का त्याग नहीं करता तब तक वर्षा निरन्तर होती है। जब चन्द्रमा केवल पापग्रह या शुभग्रह या दोनों से मिलता है तो अल्प वर्षा होती है और दूषित दिवस होता है।

वर्षा ऋतु में उक्त चक्र का न्यास करके देखना चाहिए कि चन्द्रमा किस ग्रह की नाडी में स्थित है। तदनन्तर यदि चन्द्रमा उसकी नाडी में उससे युक्त या दृष्ट हो तो अच्छी वर्षा होती है। क्षीण चन्द्रमा होने पर अच्छी वर्षा का अभाव होता है। अमृत नाडी में यदि शुभ एवं पापग्रहों का योग हो तो या तीन ग्रह चन्द्रमा के साथ उस नाडी में हो तो एक दिन लगातार तथा चार ग्रहों का योग हो तो तीन दिन तक और अमृत नाडी में पाँच ग्रहों के साथ चन्द्रमा के रहने पर सात दिन तक पानी बरसता है। इसी प्रकार जल नाडी में भी अर्थात् जलनाडी में तो तीन ग्रहों के साथ चन्द्रमा आधे दिन तक, चार ग्रहों के सहयोग से एक और जलनाडी में पाँच ग्रहों के रहने पर पाँच दिनों तक वर्षा होती है।

यदि अमृत नाडी में चन्द्रमा के साथ सब ग्रह हों तो 18 दिन, जलनाडी में 12 दिन और नीरा नाडी में समस्त ग्रहों के साथ चन्द्रमा हो तो 6 दिनों तक वर्षा होती है।

यदि नीरा नाडी में चन्द्रमा तीन ग्रहों के साथ हो तो एक प्रहर, चार ग्रहों के साथ हो तो आधे दिन तक और पाँच ग्रहों से युक्त चन्द्रमा हो तो तीन दिन तक वर्षा होती है।

यदि सौम्यनाडी में समस्त ग्रह हों तो तीन दिन तक पानी बरसता है और शेष नाडियों में ग्रह योग होने पर अधिक हवा और दूषित वृष्टि दाता ग्रह होते हैं।

जो नाडी पानी देने वाली वर्णित नहीं है किन्तु यदि उस नाडी में शुभ ग्रहों का योग होता है तो वह जलप्रदा होती है। जो जल देने वाली है परन्तु वहाँ पाप ग्रहों का योग है तो दाहकता की स्थिति होती है।

जब चन्द्रमा और मङ्गल एक नाडी में होकर गुरु से युक्त होते हैं तो समस्त भूभाग पानी से प्लावित हो जाता है।

जब बुध, शुक्र एक नाडी में होकर गुरु से युक्त होकर चन्द्रमा से संयोग करते हों तो उत्तम वृष्टि होती है।

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

वर्षाकाल में जब चन्द्रमा व शुक्र एक राशि में स्थित हों तथा क्रूर ग्रहों से दृष्ट या युत हों तो अल्प वर्षा होती है।

जब समस्त ग्रह सौम्य नाडी में होते हैं तो मध्यम वर्षा, नीरा नाडी में बादल और चन्द्रमा अपनी नाडी में ग्रहों के साथ होता है तो बहुत अच्छी वर्षा होती है।

ग्रहों के उदय एवं अस्त में, मार्गी होने के समय, वक्री होने पर और संगम हो जाने पर तथा जलनाडी में समस्त ग्रह हों तो बहुत अच्छी वर्षा होती है।

समुद्रचक्र-

कृत्तिका से आरम्भ करके नक्षत्रों को दो, दो, एक और फिर दो इस क्रम से विभक्त कर दें और इन चारों भागों को सिन्धु, तट, गिरि और सन्धि इस चक्र में बाँट देना चाहिए। शनि और चन्द्रमा अथवा सूर्य या मङ्गल गिरि पर स्थित हों तो वृष्टि खूब होती है, सुभिक्ष और धान्य की सम्पत्ति होती है। मेषसङ्क्रान्ति के दिन दैनिक नक्षत्र जहाँ दिखाई देता हो, उसके अनुसार वर्षाकाल में वृष्टि की पहिचान करनी चाहिए। समुद्र नक्षत्र होने से अतिवृष्टि, तट का नक्षत्र होने से सुवृष्टि, सन्धि का नक्षत्र होने से अवर्षा होती है।

राशितुम्बुचक्र-

सूर्य, बृहस्पति तथा बुध और चन्द्रमा का योग जल की वर्षा करता है। सूर्य और बृहस्पति तथा भृगु और चन्द्रमा का योग वायु का जोर करता है। सूर्य, बृहस्पति, शनि और मङ्गल का योग आगे बढ़ाने वाला होता है। सूर्य, मङ्गल, राहु और चन्द्रमा का योग लोह (वज्र) पात करता है। यह फल राशितुम्बुरुचक्र में कहना चाहिए। राशिचक्र में त्रिकोण के वेध को ही राशितुम्बुचक्र कहते हैं।

कालचक्र-

चर नक्षत्रों का चर नक्षत्रों में, चर स्थिर नक्षत्रों का स्थिर नक्षत्रों में, और स्थिर नक्षत्रों का चर स्थिर नक्षत्रों में वेध होने से कालचक्र का फल होता है। बृहस्पति और शनि, भृगु और चन्द्रमा, गुरु और मंगल, भृगु और चन्द्रमा, बृहस्पति और बुध, तथा शुक्र और चन्द्रमा-इन ग्रहों के योग होने से जलवर्षा होती है। बृहस्पति और सूर्य, राहु और चन्द्रमा, बृहस्पति और मंगल, शनि और चन्द्रमा, बृहस्पति और मंगल या गुरु और चन्द्रमा का योग वायु चलाता है। सूर्य और मंगल, गुरु और

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

चन्द्रमा, सूर्य और राहु, बुध और चन्द्रमा, सूर्य और शनि, तथा बुध और चन्द्रमा के योग वह्नि बढ़ाते हैं। शनि और मंगल, राहु और चन्द्रमा, शनि और मंगल, गुरु और चन्द्रमा, शनि और केतु, भृगु और चन्द्रमा इस योग से पर्वत पतन होता है। मंगल-केतु, भृगु और चन्द्रमा के योग से विद्युत् प्रचार होता है। सनि, मंगल और शुक्र इनके एक नाडीस्थित होने से शैलपात होता है।

संपातचक्रसंघट्टचक्र-

कृत्तिका और भरणी का, दोनों फाल्गुनी और आषाढों का, कृत्तिका और रेवती का तथा पूर्व फाल्गुनी एवं पूर्वाषाढ और भरणी एवं उत्तरफाल्गुनी इन नक्षत्रों के वेध से भी इस क्रम के अनुसार संपातनाडीचक्र बनता है। इस चक्र के योग से भी वृष्टि के निमित्त देखे जाते हैं। यह चक्र कृत्तिका नक्षत्र से प्रारम्भ किया जाता है। प्राचीन ऋषियों के मतानुसार यह कृत्तिकापातज नाडीवेध कहा गया है। अर्वाचीन ऋषियों के मत में अश्विनीपातज नाडीवेध माना जाता है।

अश्विनी और रेवती, अश्लेषा और मघा, ज्येष्ठा और मूल, अश्विनी और ज्येष्ठा, अश्लेषा और मूल तथा मघा ओर रेवती इन नक्षत्रों के वेध से एवं और भी नक्षत्रों के वेध से उक्त क्रमानुसार संपातनाडीचक्र बनता है। यह चक्र अश्विनी नक्षत्र से शुरु होता है।

एक नाडी पर चन्द्रमा ओर मंगल आरुढ हों और यदि बृहस्पति भी वहाँ आ जावे तो वहाँ निस्सन्देह वृष्टि होती है।

एक नाडी पर बुध, शुक्र और बृहस्पति आरूढ हों और चन्द्रमा भी वहाँ आ जावे तो वर्षा अवश्य होती है।

एक नाडी पर शुक्र, सूर्य, बुध आ जावे तो अनावृष्टि कहनी चाहिए। चारों ओर से जल सूख जाता है।

शनि, मंगल और बृहस्पति यदि आर्द्रा या मृगशिरा नक्षत्र पर आ जावें तो कुम्भ और मीन लग्न में बिजली के सहित वर्षा होती है।

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi